INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES
Peer Review, Refereed, Biannual, Multiple Language (Hindi & English), Social Science Journal, Open Access Journal
ISSN: 3107-5096(ONLINE)
VOL. 1, ISSUE 2 (DECEMBER)2025

जनजातीय परंपरा में अभिव्यक्ति एवं संवाद का स्वरूप

डॉ. वैभव उपाध्याय
सहायक अध्यापक
आईआईएमटी ग्रुप ऑफ कॉलेज
ग्रेटर नोएडा

डॉ. अनुज कुमार सिंह
सहायक अध्यापक
आईआईएमटी ग्रुप ऑफ कॉलेज
ग्रेटर नोएडा

Doi: https://doi.org/10.5281/zenodo.17627686
PP:79-86

ARTICLE INFO
Received:17-09-2025
Revised:09-10-2025
Accepted: 15-11-2025
Published:01-12-2025

सारांश

2011 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 10,42,81,034 है, जो भारत की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है। भारत अनेक भूखंडों में विभाजित है व प्रत्येक भूभाग की अपनी एक अलग विशेषता है प्रत्येक प्रदेश की अपनी एक संस्कृति है जैसे सभी जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र के प्रदेश की नगरीय संस्कृति की विशेषता जनजातीय क्षेत्रों की संस्कृति से बिल्कुल अलग है। भारत की सांस्कृतिक विविधताएँ– धर्म, वेशभूषा, खान–पान, रहन–सहन, संगीत नृत्य लोकगीत, विवाह प्रणाली, जीवन संस्कार आदि विविध क्षेत्रों में दिखाई देती है। जनजातीय समुदाय अपनी विशिष्ट भाषा, संस्कृति, राजनीति के माध्यम से अपने सामाजिक व्यवस्था एवं सांस्कृतिक परिवेश को अभिव्यक्त करते हैं। जब दो या दो से अधिक व्यक्ति आपस में कुछ सार्थक चिह्नों, संकेतों या प्रतीकों के माध्यम से विचारों या भावनाओं का आदान–प्रदान करते हैं तो उसे संचार कहते हैं।

संपूर्ण जनजातीय संचार प्रक्रिया को समझने के लिए यह समझना आवश्यक है कि, जनजातीय समुदाय के बीच आपसी संचार की प्रक्रिया कैसे संपन्न होती है? तथा जनजातीय समुदाय से गैर–जनजातीय समुदाय (जनजातियों के लिए सरकारी संचार को भी शामिल किया गया है) के बीच आपसी संचार प्रक्रिया कैसे संपन्न होती है? इसके अतिरिक्त गैर–जनजातीय समुदाय द्वारा इनसे संबंधित विभिन्न पक्षों के अध्ययन को किस प्रकार से संप्रेषित किया जा रहा है?

प्रमुख शब्द : जनजाति, अभिव्यक्ति, संचार, संवाद, स्वरूप, देशज, ज्ञान

शोध पृष्ठभूमि

शोध पत्र में जनजातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष को व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। भारत जैसे विशाल देश में सांस्कृतिक विभितता का होना स्वाभाविक है इस देश की भौगोलिक पर्यावरण, धार्मिक विश्वास,सांस्कृतिक उन्नति, औद्योगिक प्रगति एवं जीवन शैली में विविधताएँ इसकी सांस्कृतिक विविधताओं को अभिव्यक्त करते हैं। भारत की सांस्कृतिक विविधताएँ– धर्म, वेशभूषा, खान–पान, रहन–सहन, संगीत नृत्य लोकगीत, विवाह प्रणाली, जीवन संस्कार आदि विविध क्षेत्रों में दिखाई देती है। देश के महानगरों में पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है।

भारत अनेक भूखंडों में विभाजित है व प्रत्येक भूभाग की अपनी एक अलग विशेषता है प्रत्येक प्रदेश की अपनी एक संस्कृति है जैसे सभी जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र के प्रदेश की नगरीय संस्कृति की विशेषता जनजातीय क्षेत्रों की संस्कृति से बिल्कुल अलग है। जबकि उस प्रदेश की नगरीय समुदाय एवं जनजातीय समुदाय दोनों एक ही प्रदेश के निवासी हैं लेकिन इनके रहन–सहन वेशभूषा, खान–पान, संगीत नृत्य लोकगीत, विवाह प्रणाली, जीवन संस्कार, बोली–भाषा, व्यवहार, रीति–रिवाज आदि में विविधताएँ सरलता से देखी जा सकती हैं। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर जनजातीय समुदाय के संदर्भ में सरकार के द्वारा बनाई गयी समितियों का परिणाम क्या रहा है तथा इनको अन्य समुदाय या मुख्य धारा के समुदाय से किस प्रकार पृथक समझने का प्रयास किया जाता रहा है। इन सभी तथ्यों की व्याख्या निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

जनजाति पृष्ठभूमि एवं प्रावधान :

2011 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 10,42,81,034 है, जो भारत की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है। राष्ट्रीय जनजातीय नीति, 2006 के अनुसार भारत में 698 अनुसूचित जनजातियों को को पंजीकृत किया गया है। जबकि 2011 की जनगणना के अनुसार, अनुसूचित जनजातियों के रूप में पंजीकृत समूहों की संख्या 705 है। (दृष्टि आईएएस , 2019)

भारत की जनजातियाँ अपनी विविध विशेषताओं के कारण पहचानी जाती हैं जो उनके वर्गिकरण का मुख्य आधार मानी जाती है। भारत की जनजातियों को उनकी विशेषताओं के आधार पर निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

1. भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर
2. शारीरिक–प्रजातीय विशेषताओं के आधार पर

3. भाषायी विशेषताओं के आधार पर
4. सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर
5. जन सांख्यिकीय विशेषताओं के आधार पर
6. सामाजिक विशेषताओं के आधार पर
7. धार्मिक विशेषताओं के आधार पर
8. आर्थिक विशेषताओं के आधार पर
9. राजनीतिक विशेषताओं के आधार पर
10. संवैधानिक एवं प्रशासनिक विशेषताओं के आधार पर

पूर्वोत्तर के लगभग सभी जनजातीय समुदाय को समग्र इकाई के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ लगभग 200 से अधिक जनजातीय समुदाय एवं उप–जनजातीय समुदाय की अत्यधिक विविधता पाई जाती है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी भाषा, संस्कृति और राजनीतिक संरचनाएँ हैं। जनजातीय समुदाय अपनी विशिष्ट भाषा, संस्कृति, राजनीति के माध्यम से अपने सामाजिक व्यवस्था एवं सांस्कृतिक परिवेश को अभिव्यक्त करते हैं।

प्रजातीय आधार पर भारतीय कबीलों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। जिसे इनके पूर्वजों के आधार पर विभाजन किया गया है। ये सभी जनजातीय की भाषा, संस्कृति एवं स्थान के आधार पर अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था को अभिव्यक्त करते हैं। वंश के आधार या प्रजातीय आधार पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। जिसे निम्नलिखित प्रस्तुत किया गया है।

1.प्रथम श्रेणी में मंगोलीय मूल के नागा, कूकी, गारो तथा असमी कबीले या अल्मोड़ा जिले के भोटिया आदि कबीले आते हैं।

2.दूसरी श्रेणी के अंतर्गत मुंडा, संथाल, कोरवा आदि पुरा–ऑस्ट्रेलीय कबीले और

3.तीसरी श्रेणी में विशुद्ध आर्य मूल के निचले हिमालयवासी खस कबीले या हिंद–आर्य–रक्त की प्रधानता लिए किंतु मिश्रित प्रकार के भील आदि कबीले रखे जा सकते हैं।

जनजातीय समाज में संचार पद्धति :

संचार शब्द संस्कृत के 'चर' धातु एवं 'सम' उपसर्ग से मिलकर बना है, जिसका अर्थ 'चलना' होता है अन्यत्र शब्दों में 'आगे बढ़ना'। इसी प्रकार 'सम' उपसर्ग 'सम्यक' आचरण का बोध करता है अर्थात सम्यक रूप से चलना या आगे बढ़ना संचार कहलाता है। अर्थात सूचना का एक स्थान से दूसरे स्थान तक चलना 'संचार' कहलाता है (तिवारी, 2019य एनसीईआरटी, 2020–21)। संचार को अंग्रेजी में 'कम्यूनिकेशन' कहा जाता है। कम्यूनिकेशन शब्द लैटिन भाषा के 'कम्युनिस' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है, 'ज्व उंम ब्वउउवद जव ेींतम जव पउचवतज जव जतंदेउपज अर्थात सूचनाओं का आदान प्रदान अथवा किसी

जानकारी, विचार या भावनाओं को प्रेषित करना। संचार एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को पारस्परिकता के आधार पर भावनाओं तथा विचारों का आदान–प्रदान करता है (राजगड़िया, 2008)। यह एक दोहरा प्रवाह है, जिसमें एक ओर संप्रेषक (सेंडर) एवं उसका संदेश होता है, तो दूसरी ओर प्राप्तकर्ता और उसकी अनुक्रिया (रिस्पांस) है (उ.मु.वि., 2019)। इस प्रकार स्पष्ट है कि, "जब दो या दो से अधिक व्यक्ति आपस में कुछ सार्थक चिह्नों, संकेतों या प्रतीकों के माध्यम से विचारों या भावनाओं का आदान–प्रदान करते हैं तो उसे संचार कहते हैं।"

संपूर्ण जनजातीय संचार प्रक्रिया को समझने के लिए यह समझना आवश्यक है कि, जनजातीय समुदाय के बीच आपसी संचार की प्रक्रिया कैसे संपन्न होती है? तथा जनजातीय समुदाय से गैर–जनजातीय समुदाय (जनजातियों के लिए सरकारी संचार को भी शामिल किया गया है) के बीच आपसी संचार प्रक्रिया कैसे संपन्न होती है? इसके अतिरिक्त गैर–जनजातीय समुदाय द्वारा इनसे संबंधित विभिन्न पक्षों के अध्ययन को किस प्रकार से संप्रेषित किया जा रहा है?

जनजाति समुदाय की सामाजिक अभिव्यक्ति :

किसी भी जनजातीय समुदाय की सामाजिक अभिव्यक्ति उनके तीज, त्योहार, उत्सव, विवाह पद्धति एवं समूहिक कृत से किया जा सकता है। जनजातीय समुदाय में होने वाले सभी सामाजिक कृत उनके सामाजिक उत्थान को अभिव्यक्त करते हैं। जनजातियों में उनके अलग–अलग तीज, त्योहार एवं उत्सव होते हैं जिससे उनके परिवेश एवं सामाजिक मनोभाव को विस्तार से समझा जा सकता है। जनजातीय समुदाय में अपने अलग–अलग समूहिक सामाजिक कृत होते हैं जिसके माध्यम से उनके सामाजिक एकत्रीकरण के भाव एवं मनोविज्ञान को समझा जा सकता है। इनके समाज में विवाह की भी अलग–अलग पद्धतीयां होती हैं जिससे इनके सामाजिक परंपरा को विस्तार से समझा जा सकता है। इन सभी सामाजिक कृत्यों के माध्यम से जनजातीय समुदाय के संचार पद्धति को समझा जा सकता है।

गोंड जनजाति की सामाजिक व्यवस्था में अभिव्यक्ति एवं संवाद :

गोंड सामान्यता एक विवाही होते हैं अर्थात गोंड जनजातीय समुदाय में सामान्यतः एकल विवाह प्रचलन में है किन्तु इनके समुदाय में बहु विवाह को भी मान्यता प्राप्त है। जनजातीय समुदाय विशेष गोंड जनजातीय समुदाय में मेरे फुफेरे भाई बहनों में विवाह को भी मान्यता प्राप्त है जिसे दूध लोटावा विवाह कहते हैं। जनजातीय समुदाय के स्त्रियों में आभूषण एवं गोदना का प्रचलन अत्यधिक प्रचलित है। गोंड जनजातीय समुदाय में अतिथि देवो भव कि परंपरा विद्यमान है अर्थात अतिथि सत्कार का विशेष महत्व होता है (सीहोर, 2020)। इनके सामाजिक व्यवस्था से यह अभिव्यक्त होता है आज भी ये अतिथियों को कितना सम्मान देते हैं। अतिथियों के सम्मान की परंपरा को अन्य समाज में भी संप्रेषित किया जा सकता है।

गोंड जनजाति के तीज–त्योहार, में संवाद एवं अभिव्यक्ति :

गोंड जनजाति मध्य भारत की ऐसी जनजाति है, जो सबसे विकसित जनजाति के रूप में जानी और पहचानी जाती है। इस जनजाति ने कोइयाँ भाषा और अपनी कोइतूरी संस्कृति को सहेज कर रखा है। लिखित रूप में न सही, प्रचलन और व्यवहार, रहन–सहन, भाषा–बोली और तीज–त्योहार, इत्यादि के रूप में आज भी कोया पुनेम को संभाल कर रखा हुआ है (बाली, 2019) जो इनके सामाजिक व्यवस्था को दर्शाता है। गोंड जनजाति अपनी कोइतूरी संस्कृति के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक अभिव्यति को व्यक्त करने का प्रयास करता है। जबकि कोया पुनेम के माध्यम से अपनी सामाजिक अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का प्रयास करता है।

छत्तीसगढ़ की गाओन्द जनजातीय समुदाय जब आम का फल लगाने के लिए जाते है तो उस समय पर यह त्योहार मनाया जाता है इस माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया जाता है कि जब कोई वृक्ष या नया पेड़ लगाया जाता है तो उसे पुजा जाता है। अर्थात पेड़ पूजने कि प्रथा इनके इस पर्व से अभिव्यक्त होता है ।

जनजतियों द्वारा ऐसे बहुत से पर्व, उत्सव एवं तीज–त्योहार जिनके माध्यम से वो अपने समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यति को व्यक्त करते हैं। जैसे जगवाती, दिवली नाओ तिन्दआना, फाग एवं शिमगा आदि। उदाहरण के तौर पर देखे तो छत्तीसगढ़ के कुछ प्रमुख पर्व एवं त्योहार हैं जैसे छेरछेरा त्योहार पौष माह की पुर्णिमा के दिन जनजातीय समुदाय के बच्चे फसल के लिए धान मागने के लिए निकलते हैं जिसे ये सब पर्व के रूप में मानते हैं। धरसा त्योहार पौष माह में कोरबा आदिवासियों द्वारा सारसो दाल आदि की फसल काटने के बात उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इससे यह अभिव्यक्त होता है कि इनकी फसल बहुत अच्छी रही। सरहुल पर्व चौत्र माह अर्थात मार्च–अप्रैल के प्रारम्भ में जब वृक्षो में फूल लगते हैं तो उस खुशी में सरगुजा क्षेत्र के ऊराव जनजातीय समुदाय के लोग बड़े धूम–धाम से उत्सव के रूप में मानते हैं। कार्तिक माह अर्थात अक्टूबर–नवंबर में बस्तर के जनजातीय समुदाय पृथ्वी की पुजा करके इस त्योहार को बड़े धूम–धाम से मानते हैं। बीज बोहनी पर्व कोरबा जनजाति का प्रमुख पर्व है जिसे कृषि के दौरान इस पर्व को बड़े धूम–धाम से मानते हैं। करसाई पर्व अबूझमाड़िया आदिवासियों का प्रमुख त्योहार है जिसमें अविवाहित युवक एवं युवतियाँ अपने जीवन साथी का चुनाव करती हैं। (अरिहंत प्रकाशन , द.क.)

आदिवासी नवीन संचार माध्यम के कुछ सीमित उपकरण तक पहुँचते तो हैं लेकिन विश्वास नहीं करते। यानि अपने परंपरागत माध्यम के इतर नवीन संचार माध्यम का उपयोग वे तब करते हैं जब उनके पास विकल्प का अभाव होता है। बात–चित के क्रम में ही एक अन्य व्यक्ति ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए

यह कहा कि 'जब कोई एक ही सूचना एक से अधिक गाँव तक देनी होती है तो ऐसे में हम मोबाइल का उपयोग यथा संभव कर लेते हैं'। उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर शोध में यह पाया गया कि आदिवासियों में आंतरिक संचार की प्रणाली अधिक विश्वसनीय एवं प्रयोग की जाती है।

जनजातीय समाज में सामूहिक परिचर्चा के दौरान संचार : प्रक्रिया एवं माध्यम

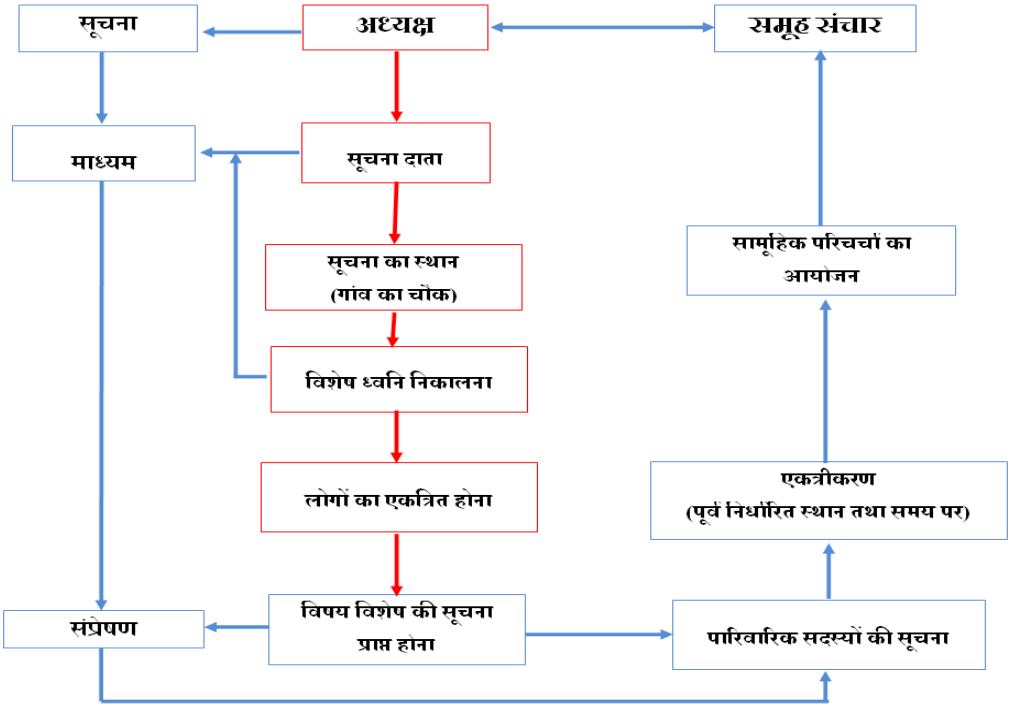

निष्कर्ष

संबंधित जनजातियों के मध्य प्रचलित जनसंचार के माध्यम सीमित रूप में ही सही लेकिन विद्यमान हैं। गोंड समुदाय के लोगों में संचार–माध्यमों का उपयोग स्थानीय (गाँवध्समाज) स्तर पर अपनी परंपरागत पद्धति से हो रहा है, लेकिन जहाँ उन्हें जरूरत एवं उपयोगिता महसूस हो रही है, वहां आधुनिक संचार माध्यमों का भी प्रयोग किया जा रहा है। जनजातियों के लिए जनसंचार या जनसम्पर्क या लोकसम्पर्क से तात्पर्य उन सभी संचार के साधनों से है जो एक साथ वृहद जनसंख्या के साथ संचार सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक होते हैं।

गोंड जनजातीय समुदाय में संचार–व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य से भाषा एक सशक्त उपकरण के रुप में काम करती है। यह उपरकरण संबंधित जनजातीय समुदाय में प्रमुखता से देखने को मिला, भाषा ही उनके तार्किक संवाद और सामूहिक विमर्श का प्रमुख उपकरण होता है।

संचार के परिप्रेक्ष्य से गोंड जनजातीय समुदाय के लिए उनकी चित्रकला और वैविध्यपूर्ण लोकानुभव आधारित आख्यानों का विशेष महत्व है। संबंधित समुदाय के लोग चित्रों के माध्यम से लोक ज्ञान का संचार करते हैं और उसके संरक्षण एवं संचारण की दृष्टि विकसित करते हैं।

संदर्भ

- *BALI, S. (2019,* अगस्त *28). हिन्दुओं का नहीं, कोइतूर समाज के लोगों का पर्व है पोला. (*न. सिद्धार्थ, *Editor) Retrieved* सितंबर *06, 2021, from https://www.forwardpress.in/: https://www.forwardpress.in/2019/08/pola-festival-gond-hindi/*
- *Census of India. (2011, March 31). Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. Retrieved August 16, 2021, from https://censusindia.gov.in/2011: https://censusindia.gov.in/2011-Common/CensusData2011.html*
- *Etv Bharat. (2021 ,* जनवरी *07). छत्तीसगढ़ में प्रचलित जनजातीय विवाह पद्धतियां. Retrieved* सितंबर *06 , 2021 , from https://www.etvbharat.com/: https://www.etvbharat.com/hindi/chhattisgarh/state/raipur/tribal-marriage-practices-prevalent-among-the-tribes-of-chhattisgarh/ct20210107175323985*
- *Koreti, S. (2016, April 04). Socio-Cultural History of the Gond Tribes of Middle India. International Journal of Social Science and Humanity, 6th(4th), 289 .*
- अरिहंत प्रकाशन . *(n.d.). छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान.* मेरठ: अरिहंत पब्लिकेशन इंडिया लिमिटेड.
- कंगाली, म. *(2011). पारी कुपार लिंगो कोयापुनेम दर्शन (Vol.* चतुर्थ संस्करण). नागपुर: उज्ज्वल सोसाइटी , जयतला रोड नागपुर से प्रकाशित.
- कर्णिका. *(2021 ,* सितंबर *07). बैल पोला त्यौहार 2021 का महत्व . Retrieved* सितंबर *09 , 2021 , from https://www.deepawali.co.in/: https://www.deepawali.co.in/pola-festival-mahatv-hindi-%E0%A4%AA%E0%A5%8B%E0%A4%B2%E0%A4%BE-%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A5%8C%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0.html*
- कासलीवाल, र. *(2021 ,* सितंबर *26). पोला-पिठोरा : किसानों का प्रमुख पर्व. Retrieved* सितंबर *26 , 2021 , from https://hindi.webdunia.com/: https://hindi.webdunia.com/other-festivals/bull-wo%E0%A4%86rshiping-festival-115091100057_1.html*

- गोंड समाज महासभा मध्य प्रदेश . *(2018 ,* मार्च *22).* *गोंडी विवाह के प्रकार*. *Retrieved* सितंबर *05 , 2021 , from https://gondsamajmahasabhamp.wordpress.com/2018/03/22/%E0%A4%B9%E0%A4%B0%E0%A4%A6%E0%A5%80-%E0%A4%B8%E0%A5%80%E0%A4%82%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A4%BE/*
- छत्तीसगढ़ साहित्य . *(n.d.).* *जनजातियों का विवाह पद्धतियाँ.* *Retrieved* सितंबर *08, 2021 , from https://cg.sahity.in/: https://cg.sahity.in/tribal-marriage-practices/*
- दृष्टि आईएएस . *(2019 ,* जुलाई *13).* *भारत के जनजातीय समुदायों पर शाशा समिति.* *Retrieved* सितंबर *04, 2021 , from https://www.drishtiias.com/: https://www.drishtiias.com/hindi/summary-of-important-reports/xaxa-committee-on-tribal-communities-of-india*
- प्रज्ञान. *(2017 ,* सितंबर *07).* *जनजाति विवाह पद्धति.* *Retrieved* सितंबर *06 , 2021 , from https://www.cgsamanyagyan.com/: https://www.cgsamanyagyan.com/2017/09/blog-post_7.html*
- बाली, स. *(2019,* अक्टूबर *29).* *गोंड परंपरा, संस्कृति और साहित्य के विकास में डॉ. मोतीरावण कंगाली का योगदान.* *Retrieved* सितंबर *03, 2021, from https://www.forwardpress.in/: https://www.forwardpress.in/2019/10/remembering-motiravan-kangali-hindi/*
- मैत्री, क. *(2017).* *गोंडवाना गोंडी शब्द कोश.* बंगलोर: कन्नड विश्वविधालय क्षेत्रीय केंद्र, बंगलोर.
- शर्मा, प. *(2021 ,* अगस्त *13).* *नागपंचमी 2021 तिथि, जानें नागों की पूजा क्यों होती है, क्यों मानते है नाग पंचमी.* *Retrieved* सितंबर *07 , 2021 , from https://navbharattimes.indiatimes.com/: https://navbharattimes.indiatimes.com/astro/dharam-karam/vrat-tyohar/nag-panchami-2021-know-when-and-why-nag-panchami-is-celebrated-or-katha-and-importance-and-significance-of-nag-panchami-98969/*
- सीहोर, व. ग. *(2020).* *मध्यप्रदेश में गोंड जनजाति.* *Retrieved* सितंबर *02, 2021 , from https://samanyagyanedu.in/: https://samanyagyanedu.in/%E0%A4%AE%E0%A4%A7%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B6-%E0%A4%97%E0%A5%8B%E0%A4%82%E0%A4%A1-%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%9C%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A4%BF/*

CITATION:

Upadhyaya, V., & Singh, K. A. (2025). जनजातीय परंपरा में अभिव्यक्ति और संवाद का स्वरुप. INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES, 1(2), 79–86.